QUADRANT 1- TRANSCRIPT AND RELATED MATERIAL

Programme: **Bachelor of Arts (Third Year)**

Subject: **Hindi**

Paper Code: **HND- 105**

Paper Title: **भारतीय साहित्य**

Unit: **IV**

Module Name: **पृथ्वी का प्रेमगीत कविता**

Module NO: **17**

Name of the Presenter: Ms. Priyanka Devu Velip

नमस्कार, मैं प्रियांका वेळीप, आज हम भारतीय साहित्य इस पेपर के अंतर्गत, कुसुमाग्रज की कविताओं में से 'पृथ्वी का प्रेमगीत' कविता पर चर्चा करेंगे। इस व्याख्यान में हम पहले प्रस्तावना पर चर्चा करेंगे बाद में भावार्थ, संदेश, भाषा और निष्कर्ष पर चर्चा करेंगे। इससे छात्र कवि कुसुमाग्रज जी से परिचित होंगे। छात्र 'पृथ्वी का प्रेमगीत' कविता के माध्यम से प्रेरित हो सकेंगे तथा छात्र कविता के उद्देश्य से भी अवगत होंगे। सबसे पहले देखते है प्रस्तावना तो यह कविता कुसुमाग्रज की एक अमर प्रेम-कविता है, जिसमें विशुद्ध, उदात्त प्रेम की महिमा वे गाते हैं। उनकी यह कविता 'विशाखा' काव्यसंग्रह में संकलित हुई है

और प्रस्तुत काव्य संग्रह में प्रेमियों की विरह भावना को व्यक्त किया गया है। पृथ्वी का प्रेमगीत कविता भी उन्हीं में से एक है।

यह थी इस कविता की प्रस्तावना अब हम आगे बढ़ते है कविता की ओर।

पृथ्वी का प्रेमगीत

चले जा रहे है युगों बाद युग ये
किए जा रहे सूर्य तुम वंचना
भ्रमण कब तलाक दायरे में करूँ मैं
करूँ कब तलाक प्रीति की याचना!

न आवेग, उच्छवास है वह नवेला
न बाकी बदन में रही आज ज्वाला
गई बुझ जवानी की जलती मशालें
हृदय आज कोना है कालौंचवाला!

मगर बल रही प्रीति की ज्योति भीतर
बलेगी अथक सिर्फ अपने सहारे न जाने
कहाँ मैं चली; इतना जानूँ
की आगे चले तुम, मैं पीछे तुम्हारे!

सजधज के आए जो अंगीनत सितारे
वे उल्का-कुसुम दिव्य बरसा रहे हैं
कहाँ किन्तु प्रतिमा ओ प्रियतम तुम्हारी
मुझे तो तिमिर-पट नज़र आ रहे हैं!

गिराए जो तुमने महाशून्य में थे
उन्हीं तेजकण को बटोरे हुए वह
रिझाने को मुझको सुधाकर है आतुर
दारुण तपाचर गहते हुए वह!

प्रभा का पसारा उभरे दुआरे
सकारे खड़ा शुक्रतारा है अविकल
करे याचना प्रीति की वह लजाधुर
हुआ जा रहा लाज से लाल मंगल

निराशा में सन्यास लेकर के उत्तर
दिशा में अचल ध्रुव है बैठा हुआ
जटाएँ बिखेरे झकी धूमकेतु
आता है जब-तब मनता हुआ!

है देखा, है पुजा अमित तेज मैंने
तो कैसे हो जुगनू हरदी से लगाना ।।
न लूँगी मैं ओछा प्रणय दुर्बलों का
भले मुझको अंतर पड़े सहना!

कभी टीस उठती तो होता है ऐसा

कि अंगार नीचे दबा जो, दहकता
सिहर उठता तन, और सुधियों से अंतस
दरकता कभी औ' कभी है कसकता
मुझे लगता बाहों से बांहे लपेटूँ
मिलूँ मैं, घुलूँ रौद्रता में तुम्हारी

पीऊँ लाल अधरों की ज्वाला, आलिंगन
उठाए व्यथा की लहर तीव्र भारी!

अमर्याद हे मित्र, महिमा तुम्हारी
मुझे ज्ञात, मैं तो महज़ धूल का कण
अलंकारने को चरण वे तुम्हारे
मेरी धूल का मुझको पूरा बड़प्पन!

अब हम देखते है कविता का भावार्थ तो प्रस्तुत कविता में सूर्य के प्रति पृथ्वी का अद्‌वितीय प्रेम दर्शाया है। पृथ्वी को पता है कि दोनों का मिलन असंभव है फिर भी वह सूर्य से हद तक प्रेम करती है। उसके पीछे-पीछे वह युगों युगों से भाग रही है। इसीलिए सूर्य से कहती है कि कितने ही युग बीत गए तुम्हारे पीछे भागते-भागते और प्रेम की याचना कराते हुए। अब तो मुझसे पहले जैसा उच्छवास भी न रहा और न ही आवेग, जवानी में जो मुझ में ज्वाला धधकती थी वह भी अब कमजोर हो गई है। फिर भी मैंने तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ा। क्योंकि अब भी प्रेम कि चिंगारी मजबूत हैं। देखती हूँ कि यह मुझे कहा तक ले चलती है। सूर्य उसको प्राप्त नहीं हो सकता है, यह जानते हुए भी उसके पीछे भ्रमण करती हैं। इसमें पृथ्वी का सूर्य के प्रति आकर्षण तथा असीम प्रेम का दर्शन होता है। इस कविता की नायिका पृथ्वी या प्रेमिका पृथ्वी प्रौढ़ा नायिका की तरह है, और सूर्य के प्रति उसका प्रेम सावित्री की तरह निष्ठावान है। बाहर से शांत दिखनेवाली यह पृथ्वी के मन में प्रेमज्योत जल रही है। जिसे केवल वह ही महसूस करती हैं।वह सूर्य से यह भी कहती है कि उसे अकेला पाकर सज-धज कर तारे आयें परंतु उनमे प्रतिमा का तेज कहाँ है? मुझे तो वे तिमिर पट ही लगे। तुमने जिस महाशून्य में गिराया था वह सुधाकर (चाँद) तेज कणों को बटोरकर मुझे रिझाने के लिए आतुर थे। प्रभा का पिसरा द्‌वार पर फैलाये

शूक्रतारा अविकल मेरे खड़ा था। लजाधुर लाज से लाल मंगल भी प्रीति याचना कर रहा था। मेरी तरफ से कोई उत्तर न पाकर निराशा में ध्रुवतारा उत्तर दिशा में सन्यासी की तरह बैठा है। अपनी जटाएँ बिखरकर मुझे बार-बार मनाने धूमकेतु आता है। सब के सब अपनी-अपनी तरह से उसे रिझाने की कोशिश कराते हैं। लेकिन वह कहती हैं उसने तो सिर्फ सूर्य के अमित तेज की पुजा की है, तो वह जुगनू जैसे टिमटिमाने वाले गृह-तारों से कैसे अपने ह्रदय में स्थान दे सकती है। वह दूसरे प्रेमियों का शृंगार, रूप-रंग से बिलकुल नहीं रीझती है। क्योंकि सूर्य के प्रति उसका प्रेम शाश्वत है। इसलिए वह कहती है 'तुम्हें भव्यता तेज देख पुजा। न मैं जुगनुओं को उगाऊँ/ न दुर्बलों सा श्रृंगार चाहूँ/ सहूँ दूरता जो तुम्हारी मिले/" इस कविता में पृथ्वी शुरू से अंत तक अपने अप्रतिम प्रेम की गवाही देती है। बहुत ही भव्य कल्पना है। ऐसा लगता है कि हम भी पृथ्वी और सूर्य के साथ अन्तरिक्ष में घूम रहे है और उनके बीच होने वाले प्रेम कलापों और संवादों के साक्षी हैं।

इस कविता की विशेषता की ओर बढते है तो कुसुमाग्रज की कविताओं की एक और विशेषता यह है कि कविता में चित्रित प्रकृति। प्रकृति के उपकरणों का जबर्दस्त मानवीयकरण। सौरमंडल में विविध ग्रहों का दर्शन पृथ्वी को एक स्त्री के रूप में कल्पना करना ऐसी विलक्षण एवं भव्य कल्पना कुसुमाग्रज ही कर सकते हैं। यह सारे ग्रह पृथ्वी से प्रेम करते हैं। प्रेमियों के रूप में उसे रिझाने के लिए किस तरह कार्य कर रहे है इसका सुंदर वर्णन उसी भव्यता के साथ करते हैं। परंतु पृथ्वी जिस सूर्य के प्रेम में व्याकुल है वह उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा। पृथ्वी को उसकी विशालता और भव्यता का बोध है, इसीलिए तो वह उसके पीछे युगों-युगों से भाग रही है। यह उनकी कविता की विशेषता है।

इस कविता का उद्देश्य है कि अंत में कवि कहते है कि पृथ्वी को अपनी लघुता और छोटेपन का भी एहसास है और सूर्य के बड़प्पन और भव्यता का भी ज्ञान है। प्रेम हमेशा भव्यता पर करना चाहिए, शूद्रता पर नहीं। प्रेम प्रकाश से करना चाहिए अंधेरे से नहीं, प्रेम हमें रोशनी दिखाने वाले, सही मार्गदर्शन करने वाले पर करना चाहिए। जो हमे अंधेरे में, निराशा में धकेल दे ऐसे से प्यार नहीं करना चाहिए। यहां कवि उदात्त प्रेम की कल्पना करते हैं। वह कमजोर से प्रेम करने की बात सपने में भी सोच नहीं सकती। पृथ्वी को उसकी और सूर्य की योग्यता का भी ज्ञान हैं। इसीलिए वह कहती हैं-

“अमर्याद है मित्र, महिमा तुम्हारी

मुझे ज्ञात, मैं धूल का कण

अलंकारने को चरण वे तुम्हारे

मेरी धूल का मुझको बड़प्पन”

‘पृथ्वी का प्रेमगीत’ कविता का सौन्दर्य यह भी है कि दोनों का मिलन असंभव है। फिर भी प्रेम का अलख जलता ही रहता है और अंत में मिलन के सपने का दुखांत अनुभव भी होता है। उसे सूर्य से दूरी स्वीकार हैं परंतु दुरबलों से प्रणय करना स्वीकार नहीं। तुम्हारी प्रीति न पाकर भले ही मुझे तुमसे दूर रहना पड़े, लेकिन मैं इनके प्रेम को स्वीकार नहीं कर सकती।

संदर्भ सूची मैंने दि है जिसे आप देख सकते है। धन्यवाद।